मूल्य 4.00
राम-रहीम और
कलियुग का भगवान्
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
मनोज कॉमिक्स

राम-रहीम और कलियुग का भगवान्

●डबल सीक्रेट एजेण्ट 00½ राम-रहीम.

● लेखक : बिमल चटर्जी.

●चित्रांकन : दिलीप कदम, हरिश्चंद्र चव्हाण.(त्रिशूल कॉमिक्स)

एक रात जब राम-रहीम गहरी निंद्रा में सोये हुए थे तो वैज्ञानिक हथियारों से सुसज्जित फोमांचू नाम के एक व्यक्ति ने, जो कि स्वयं को कलियुग का भगवान् कहता था, उनकी निंद्रा भंग कर दी।

क... कौन हो तुम और क्या चाहते हो?
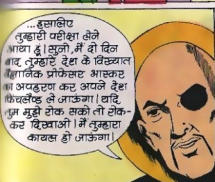
...इसलिए तुम्हारी परीक्षा लेने आया हूं। सुनो, मैं दो दिन बाद तुम्हारे देश के विख्यात वैज्ञानिक प्रोफेसर भास्कर का अपहरण कर अपने देश फिंचलैण्ड ले जाऊंगा। यदि तुम मुझे रोक सको तो रोक-कर दिखाओ। मैं तुम्हारा कायल हो जाऊंगा।

राम-रहीम ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह विचित्र इंसान रोशनखाका बनकर वहां से अदृश्य हो गया।

धांय... धांय... धांय...

हा-हा-हा! बेकार है। तुम्हारी यह गोलियां मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। मैं जा रहा हूं, लेकिन मेरा चैलेंज ध्यान रखना।

अगले दिन सुबह राम-रहीम ने चीफ मुखर्जी से मिलकर प्रोफेसर भास्कर की सुरक्षा के लिए एक योजना तैयार की।

इसके बाद वे प्रोफेसर भास्कर से मिले और उन्हें सारी बात बता कर फोमांचू से सम्बन्धित एक फिल्म भी दिखाई।
तब प्रोफेसर भास्कर ने राम-रहीम को फोमांचू के सुदर्शन चक्र के विषय में बहुत-सी रहस्यपूर्ण बातें बताईं और बोले -
बेटे, यदि फोमांचू ने सचमुच उस चक्र को ईजाद कर लिया है तो वह पूरी पृथ्वी पर कहर बरसा सकता है।
प्रोफेसर की बात सुनकर राम-रहीम चिंतित हो उठे और प्रोफेसर से विदा लेकर वापस लौट पड़े। लेकिन रास्ते में--
बचाओsss!
राम भइया, उस गाड़ी में किसी युवती की जान खतरे में है।
हां, हम उसकी मदद करेंगे।
राम ने उसका पीछा किया, लेकिन-
धांय... धांय...

फटाक्!
हीम संयोग से उस भयानक दुर्घटना से बच गये।
अब!
चलो, पुलिस स्टेशन चलकर हस घटना की सूचना देते हैं।
और राम-रहीम मोटरसाइकिल को वहीं छोड पुलिस स्टेशन की ओर चल पड़े।
वह गाडी एक वीरान खण्डहर मे जाकर रुकी।
चल छोकरी, उतर नीचे।
नही-नही, मुझे छोड़ दो। घर जाने दो मुझे।
प्यारे बच्चो, यहा तक की कहानी आप लोग मनोज कॉमिक्स के गत अंक "राम-रहीम और फोमांचू दी ग्रेट" मे पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें।

ही-ही-ही! अरी, हम तुझे छोड़ भी देंगे और तू घर भी चली जाना। बस, हम चारों को जरा खुश कर दे।
नहीं-नहीं, भगवान के लिए मुझ पर दया करो भइया। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं।
हा-हा-हा! दया करना सिर्फ भगवान ही जानता है, शैतान नहीं। और हम तो जन्मजात शैतान हैं। चल, उतर नीचे।
अरी, तू तो क्या, तेरे अच्छे भी उतरेंगे। चल।
तड़ाक
आह! नहीं।
और बदमाशों ने युवती को जबरदस्ती कार से खींच लिया।
चुपचाप हमारे साथ चली चलो, वरना हम तुम्हारा वो हश्र करेंगे कि तुम शीशे में अपना चेहरा भी नहीं पहचान पाओगी।
नहीं-नहीं मुझे छोड़ दो।
बचाओSSS!

हा-हा-हा! इन वीरान खण्डहरों में इंसान तो क्या, तेरा भगवान् भी तुझे बचाने नहीं आयेगा। चुपचाप चली चल।
खण्डहर के भीतर पहुंचकर -
चलो चेलो, महाभारत के द्रौपदी चीर हरण को फिर दोहरा दो।
आह!
र्षों बाद एक शर्मनाक घटना की फिर पुनरावृत्ति होने लगी!
हे प्रभु! यदि किसी भी दुनिया में तेरा सचमुच आस्तित्व है और मैं तुझे मानती हूं तो मेरी रक्षा कर। इन गुण्डों से मेरी इज्जत बचा।
हा-हा-हा!

ठीक तभी-

???

उस्ताद, वह देखो।

हे प्रभु! मेरी लाज रखो।

यह क्या बला हो सकती है? कहीं सचमुच में ही तो भगवान् इस छोकरी की मदद के लिए नहीं आ गया।

तभी उस रोशन इंसानी खाके ने फोमांचू का रूप धारण कर लिया।

हैं!

अरे!

चौंकी हुई आवाज ने युवती को भी बोलने पर मजबूर कर दिया!
हे ईश्वर! क्या यह तुम हो? या तुम भी इन शैतानों के कोई साथी हो!
क... कौन हो तुम?
कलियुग का भगवान, कोमांचू!
कलियुग का भगवान, कोमांचू!!!!
हां, और मैं तुम राक्षसों को मौत के घाट उतारने आया हूं। क्योंकि अब तुम्हारे पापों का घड़ा भर चुका है।
क्या बकते हो?
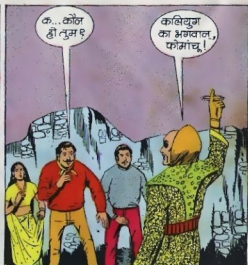
आहा! प्रभु सचमुच ही इस समय मनुष्य के रूप में मेरी मदद को आ गये हैं।
मैं बक नहीं रहा राक्षसो, अब तुम्हारा अंत निकट है।
अरे चेलो, देख क्या रहे हो? इस छोकरी से हम बाद में निपटेंगे। पहले इस कलियुग के भगवान की लीला समाप्त कर दो।
उस्ताद सहित सभी चेलों ने अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र निकाल लिए।
हा-हा-हा! अब तुम हमारे हाथों नहीं बचोगे प्यारे काले भगवान!
मूर्ख, बदतमीजी मुझे जरा भी पसन्द नहीं!
???
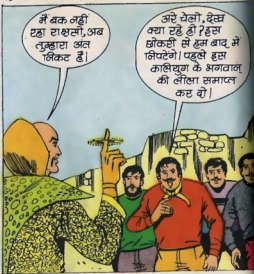
ठहर बहुरुपिये! मैं अभी तुझे तमीज सिखाता हूं।
धांय-धांय-धांय-
हा-हा-हा!
आंय! यह तो जिन्दा है! गोलियों का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा!
अरे मूर्खो, जरूर इसने वस्त्रों के नीचे बुलेट प्रूफ पोशाक पहनी होगी...
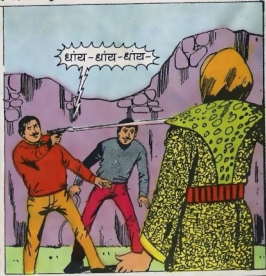
...तुम लोग इस पर टूट पड़ो और इसकी खटिया खड़ी कर दो।
तीनों चेले तुरन्त डरते-डरते अपने-अपने हथियार सम्भालकर आगे बढ़े-
हा-हा-हा! आओ-आओ, डरो नहीं! मैं तुम्हें इतनी जल्दी जान से नहीं मारूंगा।
और जैसे ही वे फोमांचू के निकट पहुंचे-
खटाक्
आह!
उफ!
खटाक्
हाय!
एक ही आक्रमण में फोमांचू ने उन्हें अपनी असीम शक्ति का परिचय दे दिया।
हाय! उस्ताद, मेरी तो बत्तीसी हिल गई।
हाय! हाय! उस्ताद, लगता है मेरी तो खोपड़ी झनझना कर रह गई है।
हाय! उस्ताद, उसने तो मेरी नाक को गोभी का पकौड़ा बना दिया है।
???

गजब!
पतले-दुबले
मान में इतनी
जबरदस्त चुस्ती,फुर्ती
शक्ति होगी,यह तो
सोच भी नहीं सकता
था।
हा-हा-हा!
अब तुम्हारा अपने बारे में क्या ख्याल है राक्षसों के सरताज।
मैं तुम्हारी चटनी पीसकर रख दूंगा।
स्ताद ने आक्रमण किया।
थांय
लेकिन उस्ताद को दूसरा आक्रमण करने का मौका नहीं मिला और-
आ-ई-ई-ई!
छोड़ो मुझे।
हा-हा-हा!
अभी छोड़ता हूँ!
और—
आ-ई-ई-ई।
बचाओऽऽऽ।
आहा!
धप्प
हाय,
मर गया।

मेरे विचार से तुम चारों में हिलने-डुलने की शक्ति नहीं होगी। इसलिए मैं ही तुम्हें एक-दूसरे से मिलाता हूं।
हाय! हाय!
उफ!
मर गया रे!
और फोमांचू ने उन चारों को एक ही हाथ से उठाक एक-दूसरे के ऊपर डाल दिया।
य... यह... त... तुम करना क्या चाहते हो?
अब मैं तुम राक्षसों की चिता जला रहा हूं।
क...क्या मतलब? क्या तुम हमें जलाकर मारने का इरादा रखते हो?
हां!
फोमांचू की बात सुनकर सबकी घिग्घी बंध गई।
यदि तुम्हारे पास माचिस है भगवान्, तो मुझे जलाने से पहले एक बीड़ी जरूर पिला दो।
मुझे भी भगवान् जी!
लेकिन मुझे सिगरेट पिलाना।
मैंने कहा न कि मैं कलियुग का भगवान हूं, इसलिए माचिस जैसी साधारण-सी वस्तु मैं अपने पास नहीं रखता।
फिर तुम हमें किस तरह जलाओगे?

अपनी तीसरी आंख द्वारा।

लेकिन तुम्हारी एक आंख तो भगवान् की कृपा से पहले ही बंद है। तुम्हारे चौखटे पर केवल एक ही आंख है, फिर तुम कौन-सी तीसरी आंख का ज़िक्र कर रहे हो भगवान् जी!

अभी मालूम हो जायेगा।

कहकर...

...फोमांचू ने अपनी इकलौती आंख बंद कर ली...

...और —
आ-ई-ई-ई
बचाओSSS!
हाय, मर गया।
ओह! विलक्षण।
मौत के भय ने उस्ताद और चेलों में पलभर के लिए एक नई शक्ति फूंक दी और वे उठ खड़े हुए।
हा-हा-हा! ऐसी मौत तुम्हें सात जन्मों तक याद रहेगी।
हाय! हाय! बचाओSSS!
कुछ देर में उस्ताद और चेले लाशों में बदल गये।
आंखें खोलो बहन और देखो, इन राक्षसों का अंत हो गया है, जो तुम्हारी इज्जत लूटना चाहते थे।
आंखों से हाथ हटाने के साथ ही युवती ने फोमांचू के पैर पकड़ लिए।
आप धन्य हैं प्रभु।
अरे-अरे, यह तुम क्या कर रही हो बहन? उठो।
सुनो मेरी बहन, न तो मैं भगवान हूं और न ही उस सर्व शक्तिमान का कोई मुकाबला कर सकता हूं...

... हां, इन जैसे कलियुग के शैतानों का काल जरूर हूं।
फिर आपके हाथ में यह सुदर्शन चक्र कैसा?
यह ईश्वरीय शक्ति नहीं, बल्कि आज के युग का वैज्ञानिक चमत्कार है। यानी कि मारक अस्त्र!
ओह!
अच्छा बहन, अब तुम अपना भी परिचय दे दो।
मेरा नाम सरिता है। मेरे पिता श्रीदेवप्रसाद इस शहर के छोटे-मोटे उद्योगपति हैं। हम अब सेन्ट्रल मार्केट में खरीद-फरोख्त कर रहे थे तो यह बदमाश मुझे धोखे से यहां उठा लाये।
ठीक है बहन। अब तुम्हें घबराने की कोई जरूरत नहीं। तुम यहीं रुको। कुछ ही देर में तुम तक पुलिस मदद पहुंच जायेगी। मैं चलता हूं।
नहीं भइया। मुझे अकेली छोड़कर मत जाओ। मुझे यहां बहुत डर लग रहा है। न जाने इस समय मैं कहां हूं और आपके जाने के बाद मुझ पर न जाने कौन-सी नई मुसीबत आ जाए!
इस समय तुम शहर से बाहर एक पुराने किले के खण्डहर में हो, लेकिन तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं। अब यहां अगर कोई आयेगा तो वह पुलिस ही होगी।

मनोज कॉमिक्स
???
... वहां से ओझलहो गया।
उधर निकटवर्ती पुलिस स्टेशन पर-
इंस्पेक्टर साहब, मेरी बेटी का अपहरण हुए पांच घंटों से ऊपर हो चुके हैं, लेकिन अभी तक कहीं से कोई खबर नहीं आई।
हाय! यदि हम बेटी को कुछ गया तो हम के नहीं रहे
...किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे! हू-हू-हू-हू!
धैर्य से काम लें बहन जी! आप तो जानती ही हैं कि मैं आस-पास के तमाम पुलिस स्टेशनों को खबर कर चुका हूं! और मुझे विश्वास है कि आपकी बेटी की इस समय बहुत ही सरगर्मी से चारों तरफ तलाश की जा रही होगी...
...ईश्वर ने चाहा तो आपकी बेटी बहुत ही जल्द और सकुशल मिल जायेगी!
भगवान करे आपका कहा सच हो जाये!
तभी-
ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन
भगवान करे, कोई शुभ सूचना हो!
???
!!!
६५

हैलो! इंस्पेक्टर विक्रमासिंह हियर।
इंस्पेक्टर, क्या आपके यहां किसी ने अपनी सरिला नाम की बेटी के अपहरण की रिपोर्ट दर्ज कराई है।
हां-हां, लेकिन तुम कौन बोल रहे हो? क्या तुम्हें उस लड़की के बारे में कुछ मालूम है।
मालूम न होता तो फोन ही क्यों करता...
???
???
...सुनो इंस्पेक्टर, वह लड़की तुम्हें पुराने किले के खण्डहर में मिल जायेगी। साथ ही उन लोगों की लाशें भी, जिन्होंने उसका अपहरण किया था।
लाशें भी। ओह! हैलो, लेकिन तुम कौन बोल रहे हो और कहां से बोल रहे हो?
बस, मेरे बारे में तुम इतना ही जान लो कि मेरा नाम कोमांचू दी ग्रेट है और मैं कलियुग का भगवान् हूं।
व्हाट? कोमांचू! कलियुग का भगवान्?

तभी दूसरी ओर से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।
हैलो-हैलो!
कलियुग का भगवान!
फोमांचू!
किसका फोन था इंस्पेक्टर अंकल?
किसी फोमांचू का। वह अपने आपको कलियुग का भगवान कह रहा था।
क्या हमारी बेटी का कुछ पता चला इंस्पेक्टर?
हां, वह पुराने किले के खण्डहर में सही-सलामत है और उसका अपहरण करनेवालों की लाशें भी वहां मौजूद हैं। यदि आप लोग भी हमारे साथ चलना चाहें तो चल सकते हैं।
कुछ देर बाद पुलिस बल के साथ राम-रहीम और सरिता के माता-पिता भी पुराने खण्डहरों में पहुंच गये।
मम्मी-डैडी!
आहा! हमारी बेटी।
तुम कैसी हो बेटी?
मैं ठीक हूं मम्मी-डैडी! एक फरिश्ते ने ऐन मौके पर आकर न केवल मेरी इज्जत बचा ली, बल्कि उन्हें जलाकर मार भी डाला...

...देखिए, वह रहीं उनकी लाशें।
हे राम!
???
!!!
क्या इन्हें कोमांचू ने ही मारा है बहन?
हां, अपनी तीसरी आंख की ज्वाला से।
क्या कहा? तीसरी आंख की ज्वाला से?
हां!
लेकिन बहन, जहां तक हम जानते हैं, उसकी एक ही आंख है, यानी वह काना है, फिर यह तीसरी आंख...?
उसकी तीसरी आंख माथे पर थी। ठीक शिवजी के समान।
कहकर सरिता ने जो कुछ अपनी आंखों से देखा था, वह सब इंस्पेक्टर व राम-रहीम को बता दिया।
सबकुछ सुनकर वे सभी आश्चर्यचकित हो उठे।
राम भइया! मुझे तो लगता है, यह कोमांचू किसी अलौकिक दुनिया का इंसान है।
यह बात नहीं है रहीम। इस वैज्ञानिक युग में किसी भी चमत्कार का आविष्कार किया जा सकता है...

...शायद ऐसे वैज्ञानिक चमत्कारों का फोमांचू ने भी आविष्कार कर लिया है।
ओह! यह भी तुम ठीक कहते हो।
अच्छा इंस्पेक्टर अंकल! अब आप अपना काम निपटाइये और हमें आज्ञा दीजिए।
ठीक है। यदि मुझे तुम्हारी मदद की आवश्यकता पड़ी तो मैं तुमसे कॉन्टेक्ट कर लूंगा और जरूरत पड़ने पर तुम भी मेरी मदद के लिए संकोच मत करना।
इंस्पेक्टर विक्रम से विदा लेकर राम-रहीम ने टैक्सी पकड़ी और घर की ओर रवाना हो गये।
राम भइया! यह तो फोमांचू का एक कथन तो सच ही गया कि उसे धन और अपने निजी स्वार्थ के लिए अपराध करने वाले अपराधियों से सख्त नफरत है और वह उनका जानी दुश्मन है।
हां, इसीलिये वह मुझे कोई पहुंची हुई चीज मालूम पड़ने लगा है। खैर, अब वक्त ही बतायेगा कि वह वास्तव में क्या है!
अगले दिन जब राम-रहीम सोकर उठे और शहरवासियों के साथ-साथ राम-रहीम ने भी अखबार में छपी खबर पढ़ी तो आश्चर्यचकित हो उठे।
कलियुग के भगवान फोमांचू द्वारा एक ही दिन में बहुत से लुटेरे-बदमाशों, खूनियों और स्मगलरों का सफाया...
???
...शहर की पुलिस फोमांचू के कारनामे से प्रसन्न भी और परेशान भी...

...अपराधियों की दुनिया में अभूत-पूर्व खलबली व हंगामा...
...फोमांचू की अपराधियों को अपराध छोड़ने की चेतावनी, वरना मौत के घाट उतारने की धमकी...
केसरी
...कल रात कुछ कुख्यात लुटेरों ने सेन्ट्रल बैंक को लूटने की कोशिश की, लेकिन अपने आपको कलियुग का भगवान कहने वाले फोमांचू ने अपने सुदर्शन चक्र से उन्हें मौत के घाट उतार दिया।
और जब राम फोमांचू से सम्बन्धित तमाम समाचार पढ़कर खामोश हुआ—
राम भइया! इस चचा ने तो रातों-रात पूरे देश में नाम कमा लिया।
हां, उसके इन कारनामों से पूरा हिन्दुस्तान उसकी इज्जत करने लगेगा, जो आगे चलकर पुलिस और कानून के लिए एक बड़ा ही भयंकर सिरदर्द बन जायेगा।
तभी—
ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन
ओह! इतनी सुबह-सुबह किसका फोन हो सकता है?
शायद चीफ का हो। तुम बैठो, मैं देखता हूं।

हैलो! राम स्पीकिंग!
मैं चीफ मुखर्जी! क्या आज का अखबार पढ़ा?
अभी पढ़कर ही चुका हूं। फोमांचू से सम्बन्धित खबरें वास्तव में हैरतअंगेज हैं। उसका व्यक्तित्व तो अब मेरी समझ से बाहर होता जा रहा है।
मैं भी ऐसा ही समझता हूं बेटे! जहां तक मेरी समझ कहती है, वह कलियुग का भगवान इन कार नामों को अंजाम दे और जनता का दिल जीतकर कोई भयानक गुल खिलाने के चक्कर में है...
...अर्थात्, वह हमारे देश में कोई भयानक साजिश रच रहा है और प्रोफेसर भास्कर का अपहरण महज एक मजाक है। वह तुम्हें और हमें उस तरफ उलझाकर अपना कोई और ही उल्लू सीधा करना चाहता है।
फिलहाल तो मैं भी इसी लाइन पर सोच रहा हूं अंकल...
...आप एक काम करें अंकल! अपने विभाग के तमाम गुप्तचरों को उसकी खोज में लगा दें। क्योंकि अब उसके पते-ठिकाने के बारे में जानना बहुत जरूरी हो गया है!
ठीक है। मैं ऐसा ही करता हूं।
फिर कुछ अन्य आवश्यक विचार-विमर्श करने और अपनी राय देने के बाद राम ने सम्बन्धविच्छेद कर दिया।
किसका फोन था राम भइया?
चीफ अंकल का।
फिर राम ने उसे दोनों के बीच हुई सारी बात बता दी।

सबकुछ सुनकर—
अच्छा भइया, कल तुम बता रहे थे कि तुमने प्रोफेसर भास्कर के अपहरण के सिलसिले में कोई ऐसी योजना तैयार की है ,जिससे फोमांचू मुंह की खाकर रह जाये।
हां। सुनो, मैं तुम्हें बताता हूं।
फिर राम, रहीम को अपनी योजना बताने लगा।
खुसर-पुसर
वाह राम भइया! क्या योजना तैयार की है तुमने भी ? अब मुझे विश्वास हो गया है कि यदि चचा ने प्रोफेसर अंकल का अपहरण करने की कोशिश की तो उसकी खटिया खड़ी हो जायेगी।
और यदि चचा ने चालाकी दिखाई और प्रोफेसर अंकल की ओर अपनी इकलौती आंख भी उठाकर नहीं देखा तो...?
तो यही होगा कि हम उसके चक्कर में घनचक्कर बन जायेंगे।
तभी-
हा-हा-हा!
क... कौन ?
???

सामने आ जाओ चचा! मैंने तुम्हें पहचान लिया है।
हा-हा-हा!
ओह! तो क्या चचा फिर हमारा भेजा चाटने आ गये!
अगले ही पल—
तुम वास्तव में बुद्धिमान हो भतीजे।
और तुम्हारा साथी भी खूब जिंदादिल है।
प्यारे चचा, तुम हमारी प्रशंसा कर हमें उल्लू की दुम बनाने की कोशिश मत करो और यह बताओ कि तुम अब क्यों आये हो?
सिर्फ यह कहने कि जो निगरानी तुमने प्रोफेसर भास्कर की सुरक्षा के लिए लगाई है, उसका मेरे सामने कोई महत्त्व नहीं है।
ओह! तो तुम्हें उनकी सुरक्षा प्रबन्धों के बारे में सबकुछ मालूम हो चुका है।
कलियुग के भगवान से कभी न कुछ छिपता है, न कुछ छुपाया जा सकता है।

अबे काने चचा! अब तो मैं तुम्हें पूरा अंधा ही बनाकर छोडूंगा!
अरे नहीं! मेरे पास आने की कोशिश मत करना, वरना...!
धड़ाक्
उफ!
रहीम!
धप्
हाय!
रहीम, तुम ठीक तो हो न?
मैंने पहले ही चेतावनी दी थी भलीजे, लेकिन तुम नहीं माने!
तभी राम ने गजब की फुर्ती से फोमांचू के चेहरे पर घूंसा मारा, लेकिन—
धड़ाक्
आह!
राम को लगा, जैसे उसने फोमांचू के चेहरे पर नहीं, बल्कि किसी लोहे की दीवार पर घूंसा मारा हो...

...वह अपनी कलाई थामकर कराह उठा—
उफ!
आखिर तुमने भी रहीम की तरह मूर्खता कर डाली भतीजे, जबकि मैं पहली मुलाकात में ही तुम दोनों को बता चुका था कि मेरा सम्पूर्ण शरीर ऐसी तरंगों के भीतर छिपा है, जिस पर किसी अस्त्र-शस्त्र या आग आदि का प्रभाव नहीं पड़ता।
तुम चाहे कितनी ही सुरक्षा तरंगों में क्यों न छुपे हो मिस्टर फोमांचू, मैं कसम खाता हूं कि जल्दी ही तुम्हारा सर कुचलकर रहूंगा।
हा-हा-हा! तब तो मुझे बहुत खुशी होगी भतीजे...
...वैसे तुम दोनों की बहादुरी भरी बातें सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। अच्छा, अब मैं चलता हूं...
...लेकिन ध्यान रखना, कल मैं प्रोफेसर भास्कर का अपहरण करने जा रहा हूं।
जल्दी ही फोमांचू कक्ष से अदृश्य हो गया।

राम भइया! इस साले काले चचा ने तो नाक में दम कर दिया। अब क्या विचार है?
तुम फटाफट तैयार हो लो। हमें इसी समय प्रोफेसर अंकल के पास चलना है।
क्यों, खैरियत तो है न?
मार्ग में बताऊंगा।
कुछ देर बाद जब वे तैयार होकर कार पर सवार हुए–
अरे! यह तुम दोनों सुबह-सुबह बिना नाश्ता-पानी किये कहां चल दिये?
हमें एक दोस्त ने नाश्ते पर बुलाया है मम्मी! हम उसी के घर जा रहे हैं।
लेकिन...!
लेकिन राम ने कार आगे बढ़ा दी।
हुंह! पता नहीं आजकल इन दोनों को क्या हो गया है। पहले से कुछ बताते ही नहीं। ऐसा समझते हैं, जैसे घर में इन दोनों से बड़ा कोई है ही नहीं।
राम भइया! कैसी मजबूरी है हमारी? बेकार ही हमें झूठ बोलना पड़ता है। और वह भी सुबह-सुबह।

लगभग आधे घण्टे के पश्चात् प्रोफेसर भास्कर की कोठी पर-
सर! राम-रहीम आपसे इसी समय मिलना चाहते हैं।
यस!
ओह!
ठीक है! भेज दो!
यस सर!
इतनी सुबह-सुबह दोनों का आना क्या मायने रखता है?
गुड मॉर्निंग अंकल!
मॉर्निंग, आओ बैठो!

कहो भाई, आज की मुलाकात में क्या विशेष बात कहने आये हो?
हम सीधे फोमांचू से मिलकर आ रहे हैं अंकल!
व्हाट?
राम ने उन्हें सारी बात बता दी। सबकुछ सुनकर–
यानी कहने का मतलब है कि कल वह मेरा अपहरण करने वाला है?
हां, और मैंने एक योजना भी बनाई है।
कहकर...
...राम ने उन्हें अपनी योजना बता दी। योजना सुनकर –
लेकिन यहां पर इतने सुरक्षा प्रबंध करने के बाद भी तुम ऐसा क्यों करना चाहते हो?
हम आपके सम्बन्ध में किसी प्रकार का कोई खतरा नहीं उठाना चाहते। मैं नहीं चाहता कि फोमांचू हमारी किसी भी ढील अथवा लापरवाही का फायदा उठा ले जाये।
ठीक है। जैसा तुम चाहते हो, मैं वैसा ही करूंगा।
तो ठीक है अंकल! अब हम चलते हैं। कल फिर आपसे मुलाकात करेंगे।
विदा लेकर राम-रहीम वापस लौट गये।
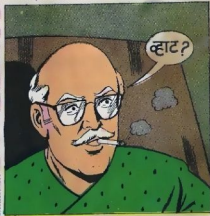
- क्या जोगाम्बो फोमांचू को तलाश कर उसे मौत के घाट उतार सका?
- कलियुग के भगवान् फोमांचू ने अपराध जगत् में और क्या-क्या गुल खिलाए?
- उसकी तीसरी आंख का क्या रहस्य था?
- क्या फोमांचू प्रोफेसर भास्कर का अपहरण कर पाने में सफल हो सका?
- क्या राम-रहीम फोमांचू को पकड़ पाने में सफल हो सके?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए
मनोज कॉमिक्स के आगामी सैट में पढ़ें